आरंभिक किसान और चरवाहे

कक्षा 6 सामाजिक विज्ञान

Complete Study Notes

सीखने के उद्देश्य

समझें कि प्रारंभिक मानव ने शिकार और भोजन संग्रह से खेती तथा पशुपालन की ओर कैसे कदम बढ़ाया। बसने की प्रक्रिया, पौधों और पशुओं के वशीकरण (Domestication), भोजन के भंडारण तथा प्रारंभिक गाँवों के विकास का अध्ययन करें। मेहरगढ़, बुर्जहोम और दाओजाली हाडिंग जैसे प्रमुख पुरातात्विक स्थलों के महत्व को समझें तथा जानें कि ये खोजें प्रारंभिक मानव जीवन के बारे में क्या जानकारी देती हैं [cite: 75]।

आरंभिक किसान और चरवाहों का परिचय

मानव इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक खेती और पशुपालन की शुरुआत थी। हजारों वर्ष पहले लोगों ने यह समझा कि केवल शिकार और भोजन संग्रह पर निर्भर रहने के बजाय वे स्वयं फसल उगा सकते हैं और पशुओं को पालकर नियमित भोजन प्राप्त कर सकते हैं। इस परिवर्तन ने मानव जीवन को पूरी तरह बदल दिया और स्थायी बस्तियों की शुरुआत हुई [cite: 75]।

खेती के विकास के साथ लोगों ने एक स्थान पर रहना शुरू किया, घर बनाए, भोजन का भंडारण किया और सामूहिक रूप से कार्य करने लगे। धीरे-धीरे छोटे-छोटे गाँव विकसित हुए, जिन्होंने आगे चलकर बड़ी सभ्यताओं की नींव रखी। भारतीय उपमहाद्वीप के अनेक पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त प्रमाण हमें इन प्रारंभिक किसानों और चरवाहों के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं [cite: 75]।

बसने की प्रक्रिया और खेती की शुरुआत

पौधों को उगाने और पशुओं को पालने की प्रक्रिया को वशीकरण (Domestication) कहा जाता है। प्रारंभिक लोगों ने ऐसे पौधों का चयन किया जिनमें बड़े दाने और मजबूत तने होते थे। इसी प्रकार उन्होंने शांत स्वभाव वाले पशुओं को पालना शुरू किया जिन्हें आसानी से नियंत्रित और बढ़ाया जा सके [cite: 75]।

सबसे पहले गेहूँ और जौ जैसी फसलें उगाई गईं तथा भेड़, बकरी, गाय और कुत्ते जैसे पशुओं को पालतु बनाया गया। ये पशु दूध, मांस, ऊन, सुरक्षा तथा अन्य आवश्यक कार्यों में उपयोगी थे। खेती और पशुपालन ने लोगों को भोजन का अधिक सुरक्षित और नियमित स्रोत उपलब्ध कराया [cite: 75]।

धीरे-धीरे लोगों ने खेत तैयार करना, बीज बोना, फसलों की देखभाल करना, खरपतवार हटाना, पक्षियों और जानवरों से फसलों की रक्षा करना तथा पकने पर फसल काटना सीख लिया। इन कार्यों के कारण लोगों को लंबे समय तक एक ही स्थान पर रहना पड़ता था [cite: 75]।

स्थायी जीवन और भोजन का भंडारण

खेती की शुरुआत के बाद लोगों का जीवन पूरी तरह बदल गया। चूँकि फसल तैयार होने में कई महीने लगते थे, इसलिए लोगों ने अपने खेतों और जल स्रोतों के पास स्थायी घर बनाने शुरू किए। यही स्थायी गाँवों की शुरुआत थी [cite: 75]।

फसल कटने के बाद अनाज को सुरक्षित रखना भी आवश्यक था। लोग बड़े मिट्टी के बर्तनों, टोकरियों तथा जमीन में बनाए गए गड्ढों में अनाज का भंडारण करते थे। कुछ अनाज भोजन के लिए रखा जाता था, जबकि शेष अगले मौसम की बुवाई के लिए सुरक्षित रखा जाता था [cite: 75]।

> **खाद्य भंडार के रूप में पशु:** पालतु पशु भी भोजन और संपत्ति का महत्वपूर्ण स्रोत बन गए। वे प्रतिदिन दूध देते थे और आवश्यकता पड़ने पर मांस भी उपलब्ध कराते थे। समय के साथ इनकी संख्या बढ़ती गई, जिससे वे प्रारंभिक समाज के लिए चलते-फिरते खाद्य भंडार बन गए [cite: 75]।

प्रारंभिक कृषि के पुरातात्विक प्रमाण

पुरातत्वविद् प्राचीन गाँवों की खुदाई करके घरों, औजारों, अनाज, मिट्टी के बर्तनों, पशुओं की हड्डियों तथा अन्य वस्तुओं का अध्ययन करते हैं। जले हुए अनाज और पशुओं की हड्डियों यह बताती हैं कि लोग कौन-सी फसलें उगाते थे और किन पशुओं को पालते थे [cite: 75]।

इन खोजों से हमें खेती, आवास, भोजन, तकनीक तथा प्रारंभिक किसानों के दैनिक जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। प्रत्येक पुरातात्विक स्थल यह समझने में सहायता करता है कि मानव समाज घुमंतू जीवन से स्थायी गाँवों तक कैसे पहुँचा [cite: 75]।

प्रमुख प्रारंभिक कृषि स्थल

- **मेहरगढ़:** वर्तमान पाकिस्तान में स्थित मेहरगढ़ दक्षिण एशिया के सबसे प्राचीन कृषि गाँवों में से एक माना जाता है। यहाँ गेहूँ, जौ, भेड़, बकरी और गाय के प्रमाण मिले हैं। मिट्टी की ईंटों से बने घरों में रहने और अनाज संग्रह के लिए अलग-अलग कक्ष बनाए जाते थे। यहाँ प्राप्त कब्रों से यह भी पता चलता है कि लोग मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास करते थे [cite: 75]।
- **बुर्जहोम:** वर्तमान कश्मीर में स्थित बुर्जहोम अपनी गड्ढों में बने घरों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ लोग जमीन में गहरे गड्ढे खोदकर उनके भीतर रहते थे, जिससे उन्हें अत्यधिक ठंड से सुरक्षा मिलती थी। यहाँ घरों के भीतर और बाहर दोनों स्थानों पर चूल्हों के प्रमाण मिले हैं [cite: 75]।
- **दाओजाली हाडिंग:** वर्तमान असम में स्थित दाओजाली हाडिंग से पॉलिश किए हुए पत्थर के औजार, अनाज पीसने के उपकरण, मिट्टी के बर्तन तथा जेडाइट पत्थर प्राप्त हुए हैं। इससे पता चलता है कि यहाँ के लोग खेती करते थे और दूर-दराज़ के क्षेत्रों के साथ व्यापारिक संबंध भी रखते थे [cite: 75]।

नियत या नवपाषाण युग और तकनीकी विकास

जिस काल में लोगों ने खेती शुरू की और पॉलिश किए हुए पत्थर के औजारों का उपयोग किया, उसे नवपाषाण युग (Neolithic Age) कहा जाता है। इस समय के औजार पहले की तुलना में अधिक मजबूत, धारदार और उपयोगी थे [cite: 75]।

लोग पत्थरों को घिसकर कुल्हाड़ी, हँसिया, चाकू तथा अनाज पीसने वाले उपकरण बनाते थे। इन औजारों की सहायता से जंगल साफ करना, खेती करना, घर बनाना और भोजन तैयार करना पहले से कहीं अधिक आसान हो गया। नवपाषाण युग मानव तकनीकी विकास का एक महत्वपूर्ण चरण था जिसने स्थायी बस्तियों और संगठित समाज के निर्माण को गति दी [cite: 75]।

आरंभिक किसानों और चरवाहों का महत्व

खेती और पशुपालन की शुरुआत ने मानव इतिहास की दिशा बदल दी। स्थायी बस्तियों के विकास से व्यापार, भोजन का भंडारण तथा मिट्टी के बर्तन बनाना, बुनाई, बढ़ईगिरी और औजार निर्माण जैसे नए व्यवसाय विकसित हुए। समाज अधिक संगठित हुआ और लोगों के बीच सहयोग बढ़ा [cite: 75]।

आज का कृषि प्रधान समाज, पशुपालन तथा गाँवों का विकास इन्हीं प्रारंभिक किसानों और चरवाहों की उपलब्धियों पर आधारित है। इसलिए मानव सभ्यता के विकास को समझने के लिए इस अध्याय का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है [cite: 75]।

अभ्यास प्रश्न

1. वशीकरण (Domestication) क्या है? [cite: 75]
2. सबसे पहले कौन-सी फसलें और पशु पालतू बनाए गए? [cite: 75]
3. खेती ने लोगों को स्थायी रूप से बसने के लिए कैसे प्रेरित किया? [cite: 75]
4. दो प्रमुख प्रारंभिक कृषि स्थलों के नाम लिखिए। [cite: 75]
5. नवपाषाण युग को महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है? [cite: 75]

उत्तर

- **उत्तर 1:** पौधों को उगाने और पशुओं को मानव उपयोग के लिए पालने की प्रक्रिया को वशीकरण (Domestication) कहा जाता है [cite: 75]।
- **उत्तर 2:** सबसे पहले गेहूँ और जौ की खेती की गई तथा भेड़, बकरी, गाय और कुत्ते जैसे पशुओं को पालतू बनाया गया [cite: 75]।
- **उत्तर 3:** फसलों की देखभाल और कटाई के लिए लोगों को लंबे समय तक एक ही स्थान पर रहना पड़ता था, इसलिए उन्होंने स्थायी घर और गाँव बसाए [cite: 75]।
- **उत्तर 4:** दो प्रमुख प्रारंभिक कृषि स्थल हैं—मेहरगढ़ और बुर्जहोम। दाओजाली हाडिंग भी एक महत्वपूर्ण स्थल है [cite: 75]।
- **उत्तर 5:** नवपाषाण युग महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी काल में खेती, पशुपालन, पॉलिश किए हुए पत्थर के औजार तथा स्थायी बस्तियों का विकास हुआ, जिसने संगठित समाज की नींव रखी [cite: 75]।